

1857 का वदिरुह

1857 का विद्रुह

ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) के खिलाफ संगठित प्रतिरोध की पहली अभिव्यक्ति भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के कार्यकाल (1856-62) के दौरान घटित

विद्रुह का केंद्र	नेता	ब्रिटिश अधिकारी (विद्रुह का दमन)
दिल्ली	बहादुर शाह ज़फर	जॉन निकोलसन
लखनऊ	बेगम हज़रत महल	हेनरी लॉरेंस
कानपुर	नाना साहेब	सर कॉलिन कैपबेल
झाँसी और ग्वालियर	रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे	जनरल ह्यूज रोज
बरेली	खान बहादुर खां	सर कॉलिन कैपबेल
बिहार	कुंवर सिंह	विलियम टेलर
इलाहाबाद और बनारस	मौलवी लियाकत अली	कर्नल ओनसेल

विद्रुह की विफलता:

- सीमित विद्रुह - रियासतों तथा दक्षिणी प्रांतों ने इसमें भाग नहीं लिया
- प्रभावी नेतृत्व का न होना
- सीमित संसाधन - लोग/सिपाही/सैनिक, धन और शस्त्र
- अंग्रेज़ी- शिक्षित मध्यम वर्गों, संपन्न महाजनों, व्यापारियों और बंगाल के ज़मींदारों ने विद्रुह को दबाने में मदद की

परिणाम:

- भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हुआ
- भारत में ब्रिटिश राज का प्रत्यक्ष शासन
- वायसराय ने गवर्नर जनरल का स्थान लिया
- व्यपगत के सिद्धांत की समाप्ति - दत्तक पुत्रों को कानूनी उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता दी गई
- ब्रिटिश अधिकारियों में भारतीय सैनिकों के अनुपात में वृद्धि हुई

विद्रुह के कारण:

- राजनीतिक - ब्रिटिश विस्तार नीति (व्यपगत का सिद्धांत)
- सेना - भारतीय सैनिकों के साथ हीन व्यवहार मुख्यतः उनके साथ जो किसान पृष्ठभूमि वाले थे,
- आर्थिक - किसानों पर अत्यधिक कर का आरोपण, राजस्व संग्रह के सख्त तरीके, ब्रिटिश वस्तुओं के आने से स्थानीय उद्योगों को क्षति
- सामाजिक-धार्मिक - पश्चिमी सभ्यता का तेज़ी से प्रसार, सती प्रथा और कन्या भ्रूण हत्या का उन्मूलन, पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को लागू करना, भारतीयों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने संबंधी मान्यता
- तात्कालिक कारण - नई एनफील्ड राइफल के कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी लगाकर धार्मिक मान्यताओं का उल्लंघन करने की अफवाहें

1857 के विद्रुह पर लिखी गई पुस्तकें

- वीर सावरकर द्वारा लिखित 1857 का स्वातंत्र्य समर
- पूरन चंद जोशी द्वारा लिखित रिबेलियन, 1857: ए सिम्पोजियम
- जॉर्ज ब्रूस मैलेसन द्वारा लिखित हिस्ट्री ऑफ द इंडियन म्यूटिनी, 1857-1858
- क्रिस्टोफर हिब्वर्ट द्वारा लिखित द ग्रेट म्यूटिनी
- इकबाल हुसैन द्वारा लिखित रिलीजन एंड आइडियोलॉजी ऑफ द रिबेल्स ऑफ 1857
- खान मोहम्मद सादिक खान द्वारा लिखित एक्सकर्वेशन ऑफ दूथ: अनसंग हीरोज़ ऑफ 1857 वॉर ऑफ इंडियेंसेस

और पढ़ें - [1857 का वदिरुह](#)